* प्राक्कथन *

आज की नारी कितनी ही एकांगी मन:स्थितियों में रहकर जी रही हो और एक उलझी हुई नारी अपने संघर्षों से जूझती हुई कभी हताश होकर घबराकर चीख उठती है तो कभी फूट-फूटकर रोने लगती है, कभी-कभी कोई नारी तो शराब का भी सहारा लेती है या कभी आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाती है। लेकिन आज के समय में नारी को आधुनिकता के बोझ को ढोना एक मजबूरी बन गई है और उसे इस अशान्ति व तनाव को झेलकर उसमें से बहार भी निकलना पड़ेगा।

हिंदी साहित्य में कई लेखकों-लेखिकाओं की एक बड़ी दुनिया है , जिन्होंने आज के समय में नारी का अपने साहित्य में वर्णन किया है। ऐसे ही कहानीकार महीप सिंह है जो अपनी कहानियों के माध्यम से नारी के गुणों को चित्रित करने में व नारी की समस्याओं को अपनी कहानियों में दर्शाया है। महीप सिंह जी एक सशक्त रचनाकार है। उनकी कहानियों में भावना व विचार प्रधान होते हैं। समाज के हर वर्ग के पात्र व जीवन के हर पहलू का वर्णन उनकी कहानियों में मिलता है। उनकी कहानियों में समाज के पिछड़े वर्ग का चित्रांकन मिलता है। कहानीकार ने भारतीय संस्कृति की पोषक होने की वजह से उनकी कहानियों को भी भारत को गौरवशाली बनानेवाले तत्वों को निरूपित किया गया है। इसी के साथ समाज के विभिन्न तबक्के को अपने लेखन से आवाज दी है। चाहे वे तृतीय प्रकृति के लोग हो या पुरुषवादी मानसिकता से परेशान स्त्री हो, सभी को सार्थक और यथार्थ तरीके से उन्होंने अपनी कहानियों में दिखाई देता है।

महीप सिंह स्वातंत्र्यत्तर साहित्यकार की पहचान रखते है। हिन्दी साहित्य में निर्मित कहानी को नयी दृष्टि प्रदान करने की कोशिश उन्होंने की है। महीप सिंह ने तत्कालीन नई कहानी और अकहानी कहानी धारा में निहित व्यक्तिपरता और गुटबंदी के प्रति असंतोष प्रकट करने हेतु सचेतन कहानी को एक आंदोलन के रुप में प्रस्तुत किया। महीप सिंह

की कहानी में अस्तित्ववादी विचारधारा, सकारात्मक दृष्टिकोण जीवन के प्रति आस्था, स्त्री-पुरुष के जटिल रिश्ते, नारी पात्रों, यौन चित्रण की विकृतता, नई-पुरानी पीढी का वैचारिक द्वंद प्रवर्तमान स्थिति को स्थान दिया है। उनके विषय का प्रस्तुतीकरण बहुत सलीके से होता है। वह बहुत क्रांतिकारी तरीके से अपनी बात रखते है, परंतु जब रचना समाप्त होती है तो पाठक के मन व मस्तिष्क में स्वाभाविक तरीके से प्रश्न उठते हैं। पाठक के अंदर विषय को लेकर चिंतन प्रारंभ होना ही रचना की सफलता है।

महीप सिंह ने सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति, मानवीय संवेदना, जीवन और जगत के अनुभव, सतेज अंतर्दृष्टि तथा व्यापक सूझ-बूझ के कारण अब तक 113 से भी अधिक कहानियों की रचना की है। जिन्हें तीन खंडों में विभाजित की गई है। अध्ययन सामग्री के रूप मैंने महीप सिंह के तीन कहानी संग्रह का उपयोग किया। (1) प्रथम खंड - 'सुबह की महक' (2) द्वितीय खंड - 'क्षणों का संकट' (2) तृतीय खंड - 'संबंधों का सन्नाटा'।

महीप सिंह ने अपनी कहानियों में कई तरह की नारी समस्याओं, उसकी वेदना, दर्द, उसकी भूमिकाएँ और विसंगतताओं का निरूपण किया है। इनकी कहानियों में नारी जीवन के कई सारे रुप देखने को मिलते है, जैसे की कामकाजी, गरीब-अमीर, तलाक़शुदा, यौन-शोषण, पति-पत्नी संबंधों, कामकाजी सहकर्मी संबंध, विवाहेत्तर संबंध, विवाह के पहले के संबंध आदि नारी के रुप को कहानियों में दर्शाया गया है। अतः उनकी कहानियों को ध्यान में रखते हुए नारी के विविध रुप का अध्ययन करना ही मेरा उद्देश्य था।

मैं अपने शोध प्रबंध **"महीप सिंह की कहानियों में नारी जीवन के विविध रुप: एक अनुशीलन"** में मेरे मार्गदर्शक प्रो.कनुभाई निनामा सर का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्हों ने मुझे इस विषय में अध्ययन करने के लिए प्रेरणा प्रदान की। मैंने अपने इस शोध प्रबंध में

महीप सिंह की कहानियों का अध्ययन कर इसमें पायी जाने वाली नारी के विविध रुप पर प्रकाश डालने की कोशिश की है।

****